सरकार श्री और हम-प्रवचन प्रतियोगिता

आज का विषय है 'सरकार श्री और हम' तो प्यारे सुन्दरसाथ जी-सरकार श्री ने तो हम सुन्दरसाथ को अपने वतन का वह सारा ही खजाना दिया-जो अनमोल है। प्रश्न तो यह उठता है कि हमने उसमें से कितना लिया ? उन्होंने तो दोनों हाथों से अर्शे-अजीम की सारी न्यामतें ही हम सुन्दरसाथ पर लुटा दीं परन्तु वह अनमोल वस्तु हम ले न पाये जो वह हमें विशेष कर देना चाहते थे। वास्तव में उन्हें हमसे उस रहनी की अपेक्षा थी जो परमधाम की आतम होने के नाते से होनी चाहिए थी।

यही कारण है कि उन्होंने हमें शुक्र-गरीबी-सब्र तथा प्रेम सेवा का पाठ पढ़ाया। क्योंकि रहनी में आने के मूलमंत्र यही गुण हैं और इन गुणों के अपनाने से इश्क-ईमान की मंजिल तक पहुंचना आसान हो जाता है जो ब्रह्मसृष्टि के लक्षण हैं। परन्तु हम इन गुणों को अपना न पाये। रहनी दिखलाने का प्रयास तो सभी ने किया-परन्तु रहनी में आये नहीं। सरकार श्री के तन के रहते तो रहनी की प्रेरणा हमें उनसे मिलती रही परन्तु उनके तन के आंखों से ओझल होते ही हमारा अपना अहंकार हमारे आड़े आ गया-जिसके कारण हम सुन्दरसाथ का प्रेम भूल गये। यदि रहनी हमारे जीवन का अंग बन गई होती तो हमारी यह दशा न होती। वाणी में निम्नलिखित चौ० इसी प्रसंग के अनुकूल कही गई है।

हादी मिल्या बोहोतो को, कोई ले न सक्या हादी चाल।
चलना हादी का वो ही चले, तो होवे इन मिसाल।।

सरकार श्री के गुणों को यदि हम गिनने बैठेंगे तो हमारी सारी आयु ही निकल जायेगी, संक्षेप में कहा जाये तो ही बेहतर होगा-हमारी समझ की आंखें खोलने का श्रेय ही सरकार श्री को जाता है। उन्होंने ही हमारे विवेक को जगाया। उदाहरण के लिए इससे पहले भी कुलजम वाणी थी-हमारे पास परन्तु हम जानते भी नहीं थे-कि श्री जी साहेब हमें क्या कहना चाहते हैं? परन्तु आज राजजी की मेहेर से हम सुन्दरसाथ वाणी की गहराईयों में इतना डूब चुके हैं कि वाहेदत्त, खिलवत और मारफत की बातें ही दिल में उतरती हैं। यहां तक कि यहां का बच्चा-बच्चा वाणी के रहस्यों को समझने लगा है। हमने इतना तो सुन रखा था कि चितवनी करना आवश्यक है परन्तु चितवनी क्यों करनी है, कैसे करनी है, जानते नहीं थे। यही नहीं हम तो अपनी पहचान से अनजान थे-सरकार श्री ने बताया कि हम निजानन्दी हैं। हमारा लक्ष्य आत्मा के उस आनन्द को पाना है, जिस आनन्द से बिछुड़ कर यहां आई है। वाणी में हम भले ही रोज पढ़ते हैं-'ब्रह्मसृष्टि वेद-कतेब में कही सो ब्रह्म समान' परन्तु निसबत की पहचान न होने के कारण हम राजजी की अंगना होते हुए भी जीवों जैसी चाल चल रहे

Nijanand App

थे-कदम-कदम पर धनी से सांसारिक सुखों की मांग कर रहे थे। सरकार श्री ने हमें हमारी निसबत की पहचान करवाई। इसके अतिरिक्त सुबह-शाम आरती में हम गाते अवश्य हैं। त्रैगुन फांस के फन्द पड़े थे, सो फन्दा निरवारे' परन्तु हम इन फन्दों से निकल कहां पाये थे? जीवन में दुख-सुख की घड़ियों के आते ही हमें दूसरे धर्मों की प्रचलित रीतियों का सहारा लेना पड़ता था। सरकार श्री ने ही हमें इन दुःख-सुख की घड़ियों में वाणी का सहारा लेने को कहा।

प्यारे सुन्दरसाथ जी-रतनपुरी आश्रम की जो तस्वीर आज हमारे समक्ष है-इसे सरकार श्री ने कितने परिश्रम से खड़ा किया होगा और फिर हम इसे केवल इमारत न समझें। यह तो उनके द्वारा की गई प्रेम-सेवा का परिणाम है। जो अनमोल है। इसका मूल्यांकन हम कैसे कर सकते हैं? क्योंकि रतनपुरी आश्रम की एक-एक ईंट हमें उनकी राजजी के प्रति निष्ठा तथा सुन्दरसाथ के प्रति प्रेम की याद दिलाती है। और फिर ईंट पत्थरों की खूबसूरत कई मंजिल इमारतें खड़ी करना आसान है जबकि प्रेम के बल पर हजारों सुन्दरसाथ के दिलों को जोड़ना अत्यन्त कठिन कार्य है। हमारे लिए यह केवल कल्पना का विषय ही रहेगा कि सरकार श्री ने 'सुन्दरसाथ' नाम से जो जमात बनाई, उसके लिए उन्हें कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा।

यदि हम सुन्दरसाथ की तुलना एक माला से करें तो जिस प्रकार माला को तैयार करने के लिए सर्व प्रथम मोती एकत्रित करने पड़ते हैं। फिर मोतियों को तराश कर माला के योग्य बनाया जाता है। तब उसे धागे में पिरोकर माला तैयार की जाती है। सरकार श्री ने 'सुन्दरसाथ' नामक जो माला तैयार की, देश-विदेश में जागनी शिविर लगा- लगा कर मोती तराश किये । फिर उन्हें सजा-संवार कर माला के योग्य बनाया। प्रेम की डोरी रूपी कड़ी में पिरो कर एक सुन्दर माला तैयार की। जो उनके गले की शोभा बनी। निश्चित रूप से 'सुन्दरसाथ' नामक यह माला ही उनके गले का वास्तविक श्रृंगार थी। संक्षेप में कहा जाये तो सुन्दरसाथ उन्हें अति प्रिय थे। यही कहा जायेगा।

प्यारे सुन्दरसाथ जी, हमें 'सुन्दरसाथ' रूपी इस माला के मोतियों को बिखरने नहीं देना है। विशेष रूप से इस बात का ध्यान देना है कि कहीं माला को जोड़ने वाली प्रेम की डोरी रूपी कड़ी कम न पड़ जाये। सरकार श्री ने जो ज्ञान का दीपक जलाया है, इस दीपक में निरन्तर घी डालते जाना है ताकि इसकी रोशनी और भी प्रखर हो-और दीप से दीप जलाने की श्रृंखला में दिन पर दिन बढ़ोत्तरी हो। सरकार श्री ने अध्यात्म की सम्पत्ति हम सुन्दरसाथ पर लुटाई है उसके वारिस हम सुन्दरसाथ हैं। इस सम्पत्ति को सहेज कर रखना ही हमारा लक्ष्य है क्योंकि सरकार श्री ने हम सुन्दरसाथ की आत्मा को जाग्रत करने के लिए अपने जीवन

Nijanand App

का एक-एक क्षण समर्पित कर दिया। यदि हम वास्तव में जाग्रत हैं तो हमें अपनी सेवाओं को आने वाले सुन्दरसाथ के लिए भी सुरक्षित रखना है। यदि उन्होंने हमें इस अनमोल वाणी का महत्व बतलाया है। श्री प्राणनाथ के स्वरूप की पहचान करवाई है, स्थान-स्थान पर श्री प्राणनाथ मन्दिर बनवा कर थाने-थापे हैं। तो हम सुन्दरसाथ यदि आने वाली पीढ़ियों के दिल में अध्यात्म की इस गहराई को नहीं उतार पाते ते हम सुन्दरसाथ कहलाने के अधिकारी भी नहीं हैं।

सरकार श्री की पारखी नजर में यह पहचानने की अद्‌भुत क्षमता थी कि कौन सुन्दरसाथ किस सेवा के योग्य है? उनकी इस दिव्य दृष्टि की अनुपम देन के कारण आज आश्रम का प्रत्येक सुन्दरसाथ कलाकार दिखाई देता है। कोई न कोई कला प्रत्येक में छिपी होती है, परन्तु कला को उभार कर निखारना एक पारखी नजर का काम है। तो सरकार श्री के भीतर छिपी हुई अलौकिक शक्ति का ही दूसरा नाम है।

असम्भव शब्द तो उनकी डिक्शनरी में था ही नहीं। क्योंकि तन-मन-धन समर्पित करने में कायरता उनके कभी आड़े नहीं आई। जी. टी. वी. तथा आस्था के माध्यम से सारे संसार को पूर्णब्रह्म की पहचान करवाने का भरसक प्रयास किया। हम सुन्दरसाथ में एक यह कमी रही कि हम उनके गुणों के प्रशंसक होते हुए भी उनके गुणों को अपना नहीं पाये। यही कारण था कि उन्होंने हमें रहनी में आने के लिए समय-समय पर चेताया। क्योंकि हम सुन्दरसाथ को वह अपने समान देखना चाहते थे। वाणी की निम्नलिखित चौ० भी इसी प्रसंग के अनुकूल हैं-

सब साथ करूं आप सा, तो मैं जागी परवान।
सब सुख देऊं धाम के, मिलाऊं मूल निशान।।

अन्त में यह कहना भी आवश्यक होगा कि सरकार श्री ने हम सुन्दरसाथ को तनों के संकीर्ण दायरे से निकलने को कहा था। उन्होंने ही हमें बताया था कि हम छटा दिन मोमिनों का है, मोमिनों के द्वारा जागनी की लीला होनी है। इस नजरिये से देखा जाये तो प्रत्येक मोमिन का दिल ही अर्श है परन्तु वह अर्श दिल जो मोमिनों को भी श्री प्राणनाथ के मार्ग पर चलाये। उन्हें अनुशासन के रास्ते पर चलाते हुए मंजिल पर ले जायें। मोमिनों के ऐसे सिरदार का होना भी आवश्यक है। यह सही है कि सरकार श्री ही ऐसे सिरदार रहें। जिन्होंने मोमिनों को जागनी की राह पर चलाया परन्तु हमें नामों के दायरों में अब नहीं बंधना है। चित्त को सदा मूल-मिलावे में युगल स्वरूप के चरणों में रखना है। मूल स्वरूप के चरणों से चित्त को हटाकर यदि हम किसी भी पंचभौतिक तन के आकर्षण में बंधे हैं तो निश्चित रूप से हम सरकार श्री की आज्ञा का उल्लंघन कर रहे हैं।

कान्ता भगत, दिल्ली

Nijanand App